७. मछली का स्वास्थ्य प्रबंधन :
इसके अंतर्गत अच्छी गुणवता के बीज, उचित पोषण उपलब्ध करना, पानी की गुणवत्ता व रख-रखाव तथा बे.प्र.त. के दिशा-निर्देशों के

अनुसार समय पर मछली का नियमित स्वास्थ्य परीक्षा, निदान और कीमोथेरेपी शामिल है।

८. तालाबो का जैवसुरक्षा :
जैवसुरक्षा कुछ विशेष क्रियाकलापों का एक समूह है जो बीमारियों के फैलने और अन्य आक्रमणकारी जैसे अवांछित मछलियॉ, पौधे,

अकशेरूकी, प्राणी से सुरक्षा करता है। बुनियादी जैवसुरक्षा का मुख्य लक्ष्य स्वच्छ और सुरक्षात्मक कपड़ों के उपयोग तथा दूषित वाहनों, कपड़े, जूते और उपकरण इत्यादि के माध्यम से रोगों के प्रसार को कम करना ।

९. संचयन और संचयन उपरान्त प्रबंधन :
दो महीने पहले उर्वरकों का उपयोग बंद कर देते है और संचयन के एक दिन पहले भोजन एवं एंटीबायोटिक का उपयोग भी बंद कर देते है जिससे उसका असर शरीर से बाहर निकल जये। साफ पानी से बने बर्फ

का उपयोग करना चाहिये। संचयन उपरांत मछली की गुणवता को बनाये रखने के लिये तापमान रोधी पैकिंग करनी चाहिए।

Design & Print - M/s Bala Graphics, Mohanpura | 9933276059

प्रस्तुति
के सरवनण, अरूण ज्योति बरूवा, जे. प्रवीणराज,
अनुराज ए, जे. रेमंड जानि एंजेल, वेंकटेश आर. ठाकुर,
टी. शिवरामाकृष्णन, के. लोहित कुमार

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
निदेशक
आईसीएआर - केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बॉक्स नं 181, पोर्ट ब्लेयर - 744101
अंडमान और निकोबार द्वीप
टेलीफोन : 03192 250341
ईमेल : directorcaripb@gmail.com

अगस्त, 2015

एन. एस. पा. ए. ए. डी. के अंतर्गत प्रकाशित - जलीय पशु रोग के लिए राट्रीय निगरानी कार्यक्रम
पर वित्त पोषित परियोजना (भा कृ अनु प - द्वारा समन्वित)

मीठे पानी में मछली पालन के बेहतर प्रबंधन तरीके

भा.कृ.अनु.प - केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बॉक्स 181, पोर्ट ब्लेयर - 744101
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

मीठे पानी में मछली पालन के बेहतर प्रबंधन तरीके (बे. प्र. त.)

बे.प्र.त. प्रोटोकॉल का एक सेट हैं जिसका मुख्य लक्ष्य

- स्थिरता बनाए रखने और लाभप्रदता मे वृद्धि के लिए संसाधनी का अनूकूल उपयोग करना है
- मछली के विकास में सुधार करना है
- पर्यावरण पर प्रभावों को कमकरके पर्यावरण की स्थिति में सुधार करना है
- बीमारी को कम करना है
- भोजन की गुणवत्ता मानकों को प्राप्त करने और उत्पाद के पिपणन में सुधार करना है

मीठे पानी में मत्स्य पालन के सभी चरणों में बे.प्र.त. प्रोटोकॉल के अनुकूलन की आवश्यकता होती है जो नीचे विस्तृत रूप में प्रस्तुत है

(१). स्थल चयन और तालाब निर्माण :

स्थल का चयन स्थल के जलवायु की स्थिति, स्थलाकृति, पानी का स्रोत और गुणवत्ता और बाजार के लिए निकटता इत्यादि पर आधारित होना चाहिए। तालाब निर्माण उपलब्ध भूमि क्षेत्र और मछली

प्रजातियॉ पर निर्भर करता है। ५-१० सेमी ऊपरी मिट्टी और वनस्पति हटा दी जाती है और १.५ से ३ मीटर की पानी की गहराई के साथ आयताकार तालाब उपयुक्त होता हैं।

२. तालाब नवीकरण और तैयारी :

पानी खाली कर तालाब सूखने के बाद तालाब को ट्रैक्टर से जोतना है ताकि तालाब के मिठठी का मुणवत्ता बढ़ सके। ५-१० टन / हेक्टेयर गाय के गोबर या अन्य अकार्बनिक उर्वरकों का इस्तेमाल किया जा

सकता है। तालाब निर्माण के समय २०० किलो / हेक्टेयर केलशियम अक्सईड (Cao) का उपयोग तालाब तलछट के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है और बाद में २०० किलो / हेक्टेयर केलशियम कारबोनेट का हर तीन महीने में एक बार इस्तेमाल किया जा सकता है।

३. तालाब की गंदगी की निगरानी :

तालाब से गंदगी को हटाने से पानी की गुणवता तथा उत्पादकता में सुधार आता है जिससे उत्पादन लागत कम हो जाती है और पर्यावरण दुष्प्रभाव कम होता है।

४. गुणवत्ता वाले बीजों का चयन :

गुणवत्ता वाले बीज के चयन के लिए आनुवंशिक इतिहास, भंडारण के

समय बीज का लबाई या वजन प्रजाति अनुपात, भंडारण घनत्व (७०००-८००० फिंगरलिंग्स / हेक्टेयर) आदि गुणों को देखा जाता है। बीज भंडारण से पहले बीज का रोग परीक्षण आवश्यक है।

५. पानी की गुणवत्ता का प्रबंधन :

पानी की गुणवत्ता का उपयुक्त स्तर बनाए रखना चाहिए। पीएच (६.५-८), तापमान (२४-३० डिग्री सेल्सियस), घुलित

ऑक्सीजन (४ मिलीग्राम / एल), पारदर्शिता (३०-४० सेमी), अमोनिया (०.०५ मिलीग्राम / एल), क्षारकता (५०-१०० मिलीग्राम / एल) और कठोरता (४० मिलीग्राम / एल) होनी चाहिए।

६. खाद्य प्रबंधन :

दिन मे दो बार चावल की भूसी और खली को १:१ के अनुपात में शरीर के वजन के ३-५% के हिसाब से दिया जाना चाहिए। मछली का

भोजन बाजार से खरीद सकते है या स्वत: इसका उत्पादन किया जा सकता है। तैयार भोजन को अच्छे हवा प्रवाह के साथ शुष्क क्षेत्र में भंडारित करना चाहिए।